राजस्थान का प्राचीन इतिहास

जनपद काल

मत्स्य जनपद (बैराठ)

- ♣ राजधानी – विराटनगर (जयपुर)
- ♣ विस्तार – अलवर, भरतपुर, करौली, जयपुर
- ♣ मत्स्य का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

शूरसेन जनपद

- ♣ राजधानी – मथुरा (उत्तरप्रदेश)
- ♣ विस्तार – भरतपुर, करौली, धौलपुर

शिवि जनपद

- ♣ राजधानी – मध्यमिका (वर्तमान – नगरी, चितौड़गढ़)
- ♣ इस जनपद की प्राचीनतम जानकारी सिक्कों से मिलती है।
- ♣ मध्यमिका का उल्लेख महाभारत व महाभाष्य दोनों में मिलता है।
- ♣ विस्तार – मेवाड़।

मालव जनपद

- ♣ प्रारम्भिक केन्द्र – मगरछल (जयपुर)
- ♣ इनका राजस्थान में प्रमुख केन्द्र कर्कोट नगर (टोंक) था। इसे अपनी राजधानी बनाया था।
- ♣ मालव जाति के लोग पंजाब की तरफ से आये थे।

अर्जुनायन जनपद

- ♣ अलवर, भरतपुर (पूर्वी राजस्थान)।

राजन्य जनपद

- ♣ पूर्वी राजस्थान।

यौद्धेय जनपद

- ♣ उत्तरी राजस्थान (गंगानगर, हनुमानगढ़)।
- ♣ यह एक गणतंत्रीय कबीला था।
- ♣ इनके सर्वाधिक सिक्के प्राप्त हुए है।
- ♣ इन्होंने कुषाण जाति का दमन किया था।

प्राचीन नाम –

- ♣ आश्रमपट्नम – केशवरायपाटन (बूँदी)
- ♣ जम्बुख रण – केशवरायपाटन (बूँदी)
- ♣ सरणवाही – शिवपुरी, सिरोही।

प्रमुख प्राचीन सिक्के

- ♣ आहत (पंचमार्क) सिक्के – 600 ई.पू. – 200 ई.पू.
- ♣ इंडो ससैनियम सिक्के – 5 वीं से 12 वीं सदी तक प्रचलित सिक्के। ईरान के ससैनियम राजाओं का प्रभाव।
- ♣ झाड़शाही सिक्का – जयपुर
- ♣ चेहरेशाही – बूँदी
- ♣ राम शाही – बूँदी
- ♣ राव शाही – अलवर
- ♣ तमचाशाही – धौलपुर
- ♣ **मेवाड़ के सिक्के –** मेवाड़ में चलने वाला मुगलकालीन सिक्का "एलची" कहलाता था। मेवाड़ के ताम्बें के सिक्के – नाथद्वारिया, ढ़ींगला, भिंडरिया, त्रिशुलिया, गदिया।
- ♣ जैसलमेर में चलने वाला प्राचीन ताँबे का सिक्का "डोडिया" कहलाता था।
- ♣ अखैशाही – जैसलमेर

मारवाड़ रियासत के सिक्के

- ♣ लल्लूलिया सिक्का – यह सिक्का सोजत टकसाल से बनता था।
- ♣ ...शाही
- ♣ गजशाही – मारवाड़
- ♣ इकतीसंदा सिक्का – यह सिक्का कुचामन (नागौर) की टकसाल से बनता था।

बीकानेर का सिक्का

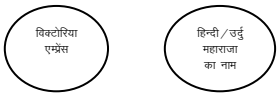

- ♣ विन्शोपक सिक्का –– चौहान वंश
- ♣ अजयराज चौहान ने रानी सोमलेखा के नाम से सिक्के चलाये थे।

प्राचीन सभ्यताएँ

- ♣ राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण का कार्य सर्वप्रथम (1871) में A.C.L. कार्लाइल ने किया था।

कालीबंगा

- ♣ हनुमानगढ़, घग्घर नदी (सरस्वती नदी) के किनारे।
- ♣ ओरेल स्टेन ने "सर्वे वर्ष ऑफ एनसियेंट साइट सरस्वती रिवर्स" पुस्तक लिखी।
- ♣ शाब्दिक अथ – काली चूड़ियाँ
- ♣ कालीबंगा सभ्यता हनुमानगढ़ जिले के दक्षिण–पश्चिम में स्थित है।
- ♣ कालीबंगा की खोज 1951–52 ई. में अमलानन्द घोष ने की थी।
- ♣ सभ्यता का उत्खनन (1961–1969 ई. तक) – बी.बी. लाल, बी.के. थापर, एम.डी. खरे, के.एम. श्रीवास्तव, एस.पी. जैन ने की ।
- ♣ यह कार्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (नई दिल्ली) द्वारा किया गया।
- ♣ कालीबंगा को दशरथ शर्मा ने हड़प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी बताया।
- ♣ **विशेषताएं –**
  - जुते हुए खेत के साक्ष्य, (दोहरी जुताई)।
  - भूकम्प के साक्ष्य।
  - उत्खनन के दौरान दो टीले मिले –
    1. पश्चिमी टीला (दुर्ग) – उच्च वर्ग के लोग रहते थे।
    2. पूर्वी टीला – निम्न वर्गों के लोग रहते थे।
  - कालीबंगा के उत्खनन से 5 स्तरों (2 प्राक् हड़प्पा सभ्यता, 3 हड़प्पा सभ्यता) का पता चला है।
  - 7 अग्नि वेदिकाओं के साक्ष्य मिले है। ये साक्ष्य हड़प्पा कालीन है।
  - यहाँ कच्ची मिट्टी की ईटों के चबूतरे बने हुए थे।
  - इन टीलों के चारों ओर अलग–अलग मिट्टी की ईटों से दीवारें (प्राचीर) बनी हुई थी।
  - अण्डाकार कुएँ मिले है।
  - ऊँट की हड्डियों के साक्ष्य।
  - जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राक् हड़प्पा कालीन है।
  - जूते हुए खेत कालीबंगा के दक्षिण पूर्व में थे।
  - गेहूँ, जौ, चना, बाजरा व सरसों के साक्ष्य मिले।
  - प्राक् हड़प्पा कालीन पाकिस्तानी सभ्यता कोटदिजी कालीबंगा से मिलती जुलती है।

गणेश्वर सभ्यता

- ♣ नीम का थाना
- ♣ कांतली नदी के किनारे।
- ♣ खोज – आर.सी. अग्रवाल द्वारा।
- ♣ ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी।

www.skresultpoint.com

- ♣ गणेश्वर सभ्यता को ताम्र संचयी सभ्यता भी कहा जाता है।
- ♣ 98 प्रतिशत शुद्ध तांबे के उपकरण।
- ♣ यहाँ मकान निर्माण में ईंटों के स्थान पर पत्थरों का प्रयोग हुआ है। यहाँ से गैरिक मृदभाण्ड मिले है।
- ♣ यहाँ के मृदभाण्डों को लाल धरातल पर काले रंगों की सुन्दर ज्यामितीय डिजाइन में सजाया गया है।

आहड़ सभ्यता

- ♣ उदयपुर
- ♣ यह आयड़ नदी के किनारे स्थित है।
- ♣ उपनाम – ताम्रवती, धूलकोट, आघाटपुर
- ♣ आहड़ सभ्यता की खोज अक्षयकीर्ति व्यास ने 1953 ई. में की थी।
- ♣ उत्खनन – एच.डी. सांकलिया, आर.सी. अग्रवाल।
- ♣ बनास नदी घाटी में अधिकांश अवशेष मिलने के कारण इस सभ्यता को बनास घाटी सभ्यता भी कहते है। बनास घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल – 1. आहड़, 2. बालाथल, 3. गिलूण्ड, 4. ओझियाना।
- ♣ यहाँ से मिट्टी का बैल मिला है जिसे बनासियल बुल कहा जाता है।
- ♣ यहाँ से लाल–काले (कृष्ण–लोहित) मिट्टी के बर्तन (मृदभाण्ड) मिले है।
- ♣ यहाँ से अनाज रखने के बड़े मृदभाण्ड मिले है जिन्हें गोरे/कोठे कहा जाता है।
- ♣ इस सभ्यता का प्रमुख व्यवसाय तांबा गलाना था।
- ♣ लौहे के उपकरणों का प्रयोग करते थे।
- ♣ रोजदी एवं भगवानपुरा सभ्यता स्थल आहड़ से सम्बन्धित है।
- ♣ दो मुख वाला चूल्हा।
- ♣ सिलबट्टा।
- ♣ चावल के दाने।
- ♣ रामसेकास्म स्पटिक।
- ♣ ताँबें की वस्तुएँ।
- ♣ लेपिस लाजुली (लाजवर्द) – कीमती पत्थर। इससे बाहरी सभ्यताओं से सम्पर्क होने की जानकारी मिलती है।

बैराठ सभ्यता –

- ♣ कोटपुतली–बरोड़, जयपुर
- ♣ इसकी खोज दयाराम साहनी ने 1936 ई. में की थी।
- ♣ उत्खननकर्ता – नील रतन बनर्जी, कैलाश नाथ दीक्षित।
- ♣ बीजक डूँगरी, महादेव डूँगरी, भीम डूँगरी, गणेश डूँगरी का सम्बन्ध बैराठ सभ्यता से है।
- ♣ बीजक डूँगरी से 1837 ई. में कैप्टन बर्ट ने अशोक का लघु शिलालेख (भाब्रू शिलालेख) खोजा।
- ♣ यहाँ से बोध संस्कृति के अवशेष मिले है।
- ♣ यहाँ से यूनानी राजा मिनेण्डर की 16 मुद्राएँ मिली है।
- ♣ चांदी के पंचमार्क सिक्के।
- ♣ यहाँ से सूती कपड़े के अवशेष मिले है। इसके अलावा बालाथल सभ्यता (उदयपुर) से भी सूती कपड़े के साक्ष्य मिले है।
- ♣ यहाँ से महाभारत कालीन एवं मौर्यकालीन अवशेष मिले है।
- ♣ शंख लिपि के साक्ष्य।

बालाथल सभ्यता –

- ♣ उदयपुर
- ♣ इसकी खोज वी.एन. मिस्त्र ने की थी।
- ♣ यहाँ से 11 कमरों वाला भवन मिला है।
- ♣ यहाँ से एक दुर्गनुमा भवन मिला है।
- ♣ ताम्रपाषाण काल से सम्बन्धित है।

सोंथी सभ्यता

- ♣ बीकानेर
- ♣ इस सभ्यता को कालीबंगा प्रथम के नाम से जाना जाता है।

बागोर सभ्यता

- ♣ भीलवाड़ा
- ♣ कोठारी नदी के किनारे
- ♣ इसकी खोज वी.एन. मिस्त्र ने की थी।
- ♣ यहाँ खुदाई के दौरान एक कंकाल मिला है जिसके गले में हड्डियों एवं पत्थर का हार पहनाया हुआ था।

रेढ़ सभ्यता –

- ♣ टोंक
- ♣ इसकी खोज कैदारनाथपुरी ने की थी।
- ♣ इसे प्राचीन भारत का टाटानगर कहा जाता है।
- ♣ यहाँ से अपोलोडोट्स का सिक्का मिला है।

नगर सभ्यता –

- ♣ टोंक
- ♣ इस सभ्यता को मालव सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।

नोह सभ्यता

- ♣ भरतपुर
- ♣ यहाँ से जाखबाबा की प्रतिमा मिली है।

जोधपुरा सभ्यता –

- ♣ जयपुर
- ♣ साबी नदी के किनारे।
- ♣ इस सभ्यता को धरतूल घाट के नाम से जाना जाता है।
- ♣ यहाँ पाँच कालखण्डों में उत्खनन हुआ जिसमें से तीसरा कालखण्ड लौहयुग से सम्बन्धित है।

ओझीयाना सभ्यता –

- ♣ ब्यावर, (2000–2001ई.), बी.आर. मीणा

रंगमहल सभ्यता –

- ♣ हनुमानगढ़
- ♣ खोज – डॉ. हन्नारिड ने (स्वीडन देश)

गिलूण्ड सभ्यता

- ♣ राजसमंद
- ♣ यह ताम्रयुगीन सभ्यता है।
- ♣ बनास नदी के किनारे।

अहिल्या बाई का कुँआ

- ♣ भरतपुर

नगरी सभ्यता –

- ♣ चितौड़गढ़
- ♣ नहरों का अवशेष मिले है।

डडीकर स्थल –

- ♣ अलवर

कुराड़ा

- ♣ नागौर

अन्य तथ्य

- ♣ सी.ए. हैकेट ने 1870 ई. में इन्द्रगढ़ एवं जयपुर से पाषाणकालीन हाथ कुल्हाड़ी की खोज की।
- ♣ राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय – 1950 ई., जयपुर

सभ्यताओं का वर्गीकरण –

- ♣ **पाषाणयुगीन सभ्यताएँ**

1. पुरापाषाण कालीन सभ्यताएँ
2. मध्य पाषाणकालीन सभ्यताएँ
3. नवपाषाण/उत्तरपाषण कालीन –

पुरापाषाण कालीन सभ्यताएँ

1. बूढ़ा पुष्कर (अजमेर)
2. विराट नगर (जयपुर)
3. इन्द्रगढ़ (बूँदी)
4. गोगाखेड़ा (राजसमन्द)

www.skresultpoint.com

5. जायल (नागौर)

मध्य पाषाण कालीन सभ्यताएँ

1. बागोर (भीलवाड़ा)
2. तिलवाड़ा (बालोतरा)
3. पचपदरा (बालोतरा)
4. निम्बाहेड़ा (चितौड़गढ़)
5. सोजत (पाली)

नवपाषाण/उत्तरपाषाण कालीन सभ्यताएँ

1. समदड़ी (बालोतरा)
2. आलनिया (कोटा)
3. भरनी (जयपुर)
4. विराटनगर (जयपुर)
5. हम्मीरगढ़ (भीलवाड़ा)
6. सोहनपुरा (सीकर)
7. हरसौरा (अलवर)

लौह युगीन सभ्यताएँ –

1. नोह (भरतपुर)
2. जोधपुरा (जयपुर)
3. सुनारी (झुंझुनूँ)
4. रेढ़ (टोंक)
5. ईसवाल (उदयपुर)
6. विराटनगर (जयपुर)
7. नगरी (चितौड़गढ़)
8. बरोर (गंगानगर)
9. नलियासर (जयपुर)
10. भीनमाल (जालौर)

कांस्य युगीन सभ्यता

1. कालीबंगा (हनुमानगढ़)

ताम्र युगीन सभ्यताएँ

1. आहड़ (उदयपुर)
2. गिलूण्ड (राजसमंद)
3. गणेश्वर (सीकर)
4. बालाथल (उदयपुर)
5. ओझियाना (भीलवाड़ा)
6. पिण्डपाड़लिया (चितौड़गढ़)
7. मलाह (भरतपुर)
8. कोल माहेली (सवाई माधोपुर)
9. चीथवाड़ी (जयपुर)

प्राचीन अभिलेख

- ♣ अध्ययन – एपिग्राफी

बड़ली का अभिलेख

- ♣ अजमेर
- ♣ यह अभिलेख 443 ई.पू. का है।
- ♣ यह राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- ♣ यह अभिलेख अजमेर के भिलोट माता मंदिर से प्राप्त हुआ है।
- ♣ यह अभिलेख ब्राह्मी लिपि का है।

घोसुण्डी का अभिलेख

- ♣ चितौड़गढ़
- ♣ दूसरी शताब्दी ई.पू. का है।
- ♣ यह अभिलेख डी.आर. भण्डारकर ने प्राप्त किया।
- ♣ भाषा – संस्कृति
- ♣ लिपि – ब्राह्मी
- ♣ यह अभिलेख राजस्थान में वैष्णव धर्म की जानकारी देने वाला सबसे प्राचीन अभिलेख है।

मोखरी यूप अभिलेख –

- ♣ बड़वा ग्राम (कोटा)

www.skresultpoint.com

- ♣ 3 लेख मिले है।

बरनाला अभिलेख

- ♣ 278 ई., जयपुर
- ♣ इसमें वैष्णव धर्म की जानकारी मिलती है।

नगरी का अभिलेख

- ♣ 424 ई.पू., चितौड़
- ♣ इस अभिलेख की खोज डी.आर. भण्डारकर ने की थी।
- ♣ यह वर्तमान में अजमेर संग्रहालय में रखा हुआ है।

सामोली स्तम्भ लेख

- ♣ 643 ई., मेवाड़
- ♣ राजा गुहिल के समय का अभिलेख

मानमौरी अभिलेख

- ♣ 713 ई. पुठोली (चितौड़) के मानसरोवर झील से प्राप्त हुआ।
- ♣ यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड ने प्राप्त किया था।
- ♣ उत्कीर्ण कर्ता : सिवादित्य (शिवादित्य)
- ♣ इसमें समुद्र मन्थन की जानकारी मिलतीी है।
- ♣ इसमें मौर्यकालीन शासकों की जानकारी मिलती है।
- ♣ इस अभिलेख को कर्नल जेम्स टॉड अपने साथ लंदन ले जा रहा था, भारी होने के कारण उसे समुद्र में फेंक दिया।
- ♣ कन्सव, कोटा के अभिलेख से भी मौर्य कालीन शासकों की जानकारी मिलती है।

बुचकला अभिलेख

- ♣ जोधपुर, 815 ई.

शंकर घट्टा अभिलेख

- ♣ चितौड़गढ़, 815 ई.

घटियाली अभिलेख

- ♣ 861 ईस्वी, मण्डोर (जोधपुर)
- ♣ यह अभिलेख राजा कुक्कुक के समय का है।
- ♣ यह अभिलेख 4 (चार) अभिलेखों का समूह है।
- ♣ इस अभिलेख में राजा हरिश्चन्द्र से लेकर कक्कुक तक की जानकारी मिलती है।
- ♣ इसमें मग जाति के ब्राह्मणों की जानकारी मिलती है।
- ♣ इसकी भाषा संस्कृत एवं प्राकृत है।
- ♣ उत्कीर्ण कर्ता – कृष्णेश्वर

हर्षनाथ मंदिर अभिलेख

- ♣ 973 ई., सीकर
- ♣ इसमें पाशुपत सम्प्रदाय से सम्बन्धित गुरू विश्वरूप की जानकारी मिलती है।

नाथ प्रशस्ति

- ♣ 977 ई., उदयपुर (लकुलीश मंदिर)
- ♣ लेखक – आम्र कवि

पावाहेड़ा अभिलेख

- ♣ 1059 ई., बांसवाड़ा
- ♣ इसमें मालवा एवं वागड़ के परमारों की जानकारी मिलती है।

बिजौलिया अभिलेख (1170 ई.)

- ♣ चौहान राजा सोमेश्वर के समय का अभिलेख।
- ♣ बिजौलिया के पार्श्वनाथ जैन मन्दिर पर जैन श्रावक लोलाक ने लगवाया था।
- ♣ प्रशस्तिकार – गुणभद्र
- ♣ यह अभिलेख शाकम्भरी के चौहानों की प्रारम्भिक जानकारी देता है।
- ♣ इस अभिलेख के अनुसार वासुदेव चौहान ने 551 ई. में चौहान स्राामाज्य की नींव रखकर सांभर झील का निर्माण करवाया था।
- ♣ इस अभिलेख के अनुसार विग्रहराज–IV ने दिल्ली को जीतकर दिल्ली शासक स्तम्भ लेख लिखवाया।

- ♣ इसमें नगरों के प्राचीन नाम मिलते है–
  1. जाबालिपुर – जालौर
  2. शाकम्भरी – सांभर
  3. श्रीमाल – भीनमाल
  4. अहिच्छत्रपुर – नागौर
  5. विजयावली – बिजौलिया
  6. उत्तमाद्री – बिजौलिया के आस–पास का पठारी भाग।

नेमीनाथ (आबू) मंदिर अभिलेख
- ♣ 1230 ई.
- ♣ लेखक शुभचन्द्र (सोमेश्वर), इन्होंने सुरथोत्सव ग्रंथ लिखा।

चीरवा का अभिलेख
- ♣ 1273 ई., उदयपुर
- ♣ शिल्पी – देल्हण
- ♣ मेवाड़ गुहिल राजाओं की जानकारी
- ♣ भाषा – संस्कृत

रसिया का छतरी अभिलेख
- ♣ चितौड़गढ़
- ♣ 1274 ई.
- ♣ नरवर्मा गुहिल के समकक्ष

धाईबी पीर अभिलेख
- ♣ 1325 ई., चितौड़गढ़
- ♣ इसमें चितौड़गढ़ का नाम खिज्राबाद मिलता है।

श्रृंगी का अभिलेख
- ♣ 1428 ई., उदयपुर
- ♣ यह मोकल के समय का अभिलेख है।
- ♣ प्रशस्तिकार – वाणी विलास योगेश्वर
- ♣ इसमें भीलों के सामाजिक जीवन की जानकारी मिलती है।

पदराड़ा अभिलेख
- ♣ 1433 ई.
- ♣ महाराणा कुंभा का सबसे प्राचीन अभिलेख।

रणकपुर अभिलेख
- ♣ 1439 ई., पाली
- ♣ प्रशस्तिकार – देपाक
- ♣ इसमें बप्पा रावल एवं काल–भोज को अलग–अलग आदमी बताया गया है।
- ♣ इसमें महाराणा कुंभा की विजयों का वर्णन मिलता है।

कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति
- ♣ 1460 ई., चितौड़गढ़
- ♣ इसकी रचना अत्रिभट्ट, पुत्र महेश भट्ट ने की।
- ♣ इसमें महाराणा कुंभा के ग्रंथों एवं उपाधियों का वर्णन मिलता है।

कुम्भलगढ़ प्रशस्ति
- ♣ 1460 ई., राजसमन्द
- ♣ प्रशस्तिकार – महेशभट्ट
- ♣ इस लेख में बप्पा रावल को विप्रवंशीय ब्राह्मण कहा गया है।

एकलिंग प्रशस्ति
- ♣ 1488 ई., उदयपुर
- ♣ प्रशस्तिकार – महेश भट्ट (महेश्वर)

रायसिंह प्रशस्ति
- ♣ 1594 ई., बीकानेर (जूनागढ़ दुर्ग)
- ♣ प्रशस्तिकार – जईता

जगनाथ प्रशस्ति
- ♣ 1652 ई., उदयपुर
- ♣ प्रशस्तिकार – कृष्णभट्ट
- ♣ यह प्रशस्ति उदयपुर के जगदीश मंदिर में उत्कीर्ण है।
- ♣ इसमें हल्दीघाटी युद्ध का वर्णन मिलता है।

राज प्रशस्ति
- ♣ 1676 ई.,
- ♣ मेवाड़ महाराणा राजसिंह के समय राजसमन्द झील की उत्तरी पाल (नौचौकी) पर 25 शिलालेखों पर उत्कीर्ण विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है।
- ♣ भाषा – संस्कृत
- ♣ इसमें मेवाड़ मुगल संधि का वर्णन मिलता है।

पुर ताम्रपत्र
- ♣ हाड़ी रानी कर्मावती द्वारा जौहर से पूर्व दिये गये भूमि अनुदान की जानकारी।

चिकली ताम्रपत्र
- ♣ 1483 ई.
- ♣ किसानों से वसूली जाने वाली लाग–बाग की जानकारी।

दस्तुर कौमवार
- ♣ जयपुर रियासत के अभिलेखों की श्रृंखला।

अड़सट्टा
- ♣ जयपुर राज्य का राजस्व रिकॉर्ड।

रूक्का
- ♣ राज्य में अधिकारियों के मध्य का पत्र व्यवहार

मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास

by – S.R. जाणी

राजपूत काल : 7 वीं सदी से 12 वीं सदी तक का समय
- ♣ सर्वप्रथम 1800 ई. में जॉर्ज थॉमस ने राजपूताना शब्द का प्रयोग किया था।
- ♣ **राजपूतों की उत्पति के सिद्धांत –**

I. **अग्निकुण्ड का सिद्धांत** – पृथ्वीराज रासौ ग्रंथ (लेखक–चन्दरबरदाई) के अनुसार आबूपर्वत पर ऋषि वशिष्ठ ने यज्ञ की रक्षा के लिए 4 वीर योद्धा उत्पन्न किये थे। 1. प्रतिहार, 2. परमार, 3. चालुक्य (सोलंकी), 4. चौहान (PPCC)

II. **हूणों (शक–यूची) की संतान** – V.A. स्मिथ

III. **यूच्ची (कुषाण) जाति के वंशज** – इतिहासकार कनिंघम ने ब्रोच गुर्जर ताम्रपत्र के आधार पर गुर्जर प्रतिहार (राजपूत) को कुषाण जाति से सम्बन्धित बताया था।

IV. **शक–सीथियन से सम्बन्धित** – कर्नल जेम्स टॉड, विलियम क्रुक।

V. **वैदिक आर्यों की संतान** – C.V. वैद्य

गुर्जर–प्रतिहार वंश

- ♣ गुर्जर – क्षेत्र विशेष अर्थात् गुर्जरात्र प्रदेश
- ♣ प्रतिहार – पद/जाति (द्वारपाल)
- ♣ प्रतिहारों को निम्न अभिलेख में गुर्जर कहा गया है।

1. राधनपुर
2. देवली
3. कारडाह
4. नीलकुण्ड (रानीकादे में)

- ♣ मुहणौत नैणसी ने गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं का वर्णन किया है।
- ♣ सबसे प्राचीन शाखा – मण्डोर
- ♣ ह्वेनसांग ने गुर्जर–प्रतिहारों का मूल स्थान कू–चे–लो (गुर्जरात्र–प्रदेश) को बताया तथा इसकी राजधानी पोलोमेलो (भीनमाल) को बताया था।

www.skresultpoint.com

- R.C. मजूमदार ने गुर्जर–प्रतिहारों को 6–12 वीं सदी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य करने वाला बताया था।

–: मण्डोर शाखा :–

- मूल पुरूष – **हरिश्चन्द्र** (उपाधि – रोहिलिद्धि)
- यहाँ के प्रतिहार क्षत्रिय माने जाते है जबकि हरिश्चन्द्र ब्राह्मण थे।
- इनके पुत्र रज्जिल ने **मण्डोर** को राजधानी बनाया था।
- मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली रज्जिल से प्रारम्भ होती है।
- नागभट्ट प्रथम ने **मेड़ता** को राजधानी बनाया था।
- प्रतिहार राजा कक्क व्याकरण, तर्कशास्त्र, ज्योतिष कला एवं काव्य शास्त्र का ज्ञाता था।
- राजा कक्कुक के समय 861 ई. का घटियाली अभिलेख प्रसिद्ध है।
- **प्रमुख राजाओं का क्रम** : हरिश्चन्द्र – रज्जिल – नरभट्ट – नागभट्ट प्रथम – तात् – यशोवर्धन – शीलूक – कक्क – कक्कुक – बाउक

–:प्रतिहारों की भीलमान, उज्जैन व कनौज शाखाः–

राजधानियाँ –

1. मण्डोर – रज्जिल
2. मेड़ता – नागभट्ट I
3. भीनमाल – नागभट्ट I
4. उज्जैन – नागभट्ट I
5. कन्नौज – नागभट्ट II

प्रमुख राजा

- **नागभट्ट I** (अरब आक्रमणकारियों को रोकने का कार्य किया था।)
- कक्कुस्थ
- देवशक्ति
- वत्सराज (जयवराह एवं रणहस्तिन की उपाधि)
- नागभट्ट II (परमभट्टारक महाराजाधिराज की उपाधि धारण की, इन्होंने अपने पराक्रम से गुर्जरों की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित की थी।)
- रामभद्र (इनकी हत्या मिहिरभोज ने की थी।)
- मिहिरभोज I (आदिवराह की उपाधि, ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की थी, इनके समय बंगाल का राजा देवपाल था।)
- महेन्द्रपाल I
- महिपाल I (इनके समय अरब यात्री अलमसूदी यात्री था।)
- राज्यपाल
- यशपाल (अंतिम राजा)।

वत्सराज

- इनके समय कन्नौज पर अधिकार को लेकर त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारंभ हुआ था।
- ओसिया में महावीर स्वामी मंदिर बना था।

दरबारी विद्वान :–

- उद्योतनसूरी ने कुवलयमाला ग्रंथ लिखा था। जिसमें 18 भाषाओं का उल्लेख है।
- जिनसेन सूरी ने हरिवंश पुराण की रचना की।

मिहिरभोज

- अरब यात्री सुलेमान मिहिरभोज के समय आया था। इसने सैन्य व्यवस्था का उल्लेख किया था।

कवि राजशेखर :–

- महेन्द्रपाल एवं महिपाल के दरबारी।
- महेन्द्रपाल के गुरू राजशेखर थे।
- राजशेखर की प्रमुख रचना – कर्पूरमंजरी, काव्य मीमांशा, बाल रामायण।

अन्य तथ्य :–

- राजोरगढ़ (अलवर) के प्रतिहार राजा मंथनदेव प्रसिद्ध थे।
- राजोरगढ़ एवं आभानेरी (दौसा) के कलात्मक वैभव प्रतिहार काल का है।
- प्रतिहार वंश का अंत प्रभावकवर्धन ने किया।
- प्रतिहार अभिलेखों में राजपुरूष पद का उल्लेख मिलता है।

चौहान राजवंश

वासुदेव चौहान – मूल पुरूष/संस्थापक

- इन्होंने 551 ई. में सांभर झील का निर्माण करवाया था।
- मूल स्थान – सपादलक्ष (जांगल प्रदेश के आस–पास)
- राजधानी – अहिच्छत्रपुर (नागौर)
- प्रारम्भिक जानकारी – बिजौलिया अभिलेख (1170 ई.) से।
- बिजौलिया अभिलेख में चौहानों को वत्सगौत्रीय ब्राह्मण बताया गया है।
- बाद में राजधानी शाकम्भरी (सांभर) बनी थी।
- **चन्दनराज** की रानी **आत्मप्रभा** (रूद्राणी) पुष्कर घाट पर प्रतिदिन हजार दीपक जलाती थी।
- **गुवक प्रथम** ने **हर्षनाथ मंदिर** (सीकर) का निर्माण करवाया था।
- हर्षनाथ मंदिर **शिलालेख** विग्रहराज–II के समय का है।
- गोविन्द–III को **वैरीघट्ट** की उपाधि दी गई थी।
- पृथ्वीराज–I ने पुष्कर पर आक्रमण करने वाले 700 चालुक्यों को मारा था।

अजयराज

- 1113 ई. में तारागढ़ दुर्ग (अजयमेरू) का निर्माण कर अजमेर को राजधानी बनाया था।
- अजयराज पृथ्वीराज-I का पुत्र था।
- अपने एवं रानी सोमलेखा के नाम से सिक्के जारी किये थे।
- अजयराज को पृथ्वी को चाँदी की मुद्राओं से भर देने वाला बताया गया है।

अर्णोराज

- इनकें समय चौहान चालुक्य संघर्ष की शुरूआत हुई थी।
- चालुक्य राजा जयसिंह सिद्धराज की पुत्री कांचनदेवी से विवाह किया था।
- पुष्कर में वराह मंदिर बनवाया था।
- इनकी हत्या इनके पुत्र जगदेव ने की थी।

विग्रहराज IV (बीसलदेव)

- उपाधि – कवि बांधव (कटिबंधु)
- इन्होंने हरिकेली नाटक लिखा था।
- इनके दरबारी सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की थी।
- इन्होंने बीसलपुर कस्बे की स्थापना की थी।
- इन्होंने दिल्ली जीतकर दिल्ली शिवालिक स्तंभ लेख लिखवाया था।
- बीसलदेव ने जबालिपुर का नाम ज्वालापुर किया था।

www.skresultpoint.com

♣ इन्होंने अजमेर में संस्कृत पाठशाला बनवाई थी। इसे तोड़कर कुतुबद्दीन ऐबक ने अढ़ाई दिन का झोपड़े का रूप दिया गया।

पृथ्वीराज–II

♣ इन्होंने मेनाल (भीलवाड़ा) के सुहवेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

सोमेश्वर

♣ प्रताप लंकेश्वर की उपाधि धारण की थी।

पृथ्वीराज–III (1977–1192)

जन्म – 1166 ई. (11 वर्ष की आयु में राजा)
पिता – सोमेश्वर
माता – कर्पूरदेवी
प्रधानमंत्री – **कैमास (कदमवास)**

♣ कैमास ने मोहम्मद गौरी के गुजरात आक्रमण के समय चालुक्यों को सहायता देने से पृथ्वीराज को मना किया था।

सेनापति – भुवनमल
उपाधि – रायपिथौरा, दलपूंगल

♣ पृथ्वीराज ने प्रारंभिक समय में भण्डनायकों का दमन किया था।

♣ **तराईन का प्रथम युद्ध** – 1191 – पृथ्वीराज तृतीय vs मोहम्मद गौरी : पृथ्वीराज की जीत

♣ **तराईन का द्वितीय युद्ध** – 1192 – पृथ्वीराज तृतीय vs मोहम्मद गौरी : मोहम्मद गौरी की जीत

♣ पृथ्वीराज के समय महोबा का चन्देल राजा परमर्दिदेव था। जिसका सेनापति आल्हा व उदल थे।

♣ महोबा को जीतकर (1182) पुंजनराज को नियुक्त किया था।

♣ कन्नौज के गहड़वाल राजा जयचंद की पुत्री संयोगिता से प्रेम विवाह किया था।

♣ इनके समय गुजरात का चालुक्य राजा भीम–II था।

पृथ्वीराज के दरबारी :–

♣ चन्दबरदाई – पृथ्वीराज रासौ की रचना

♣ आशाधर, जनार्दन, वागीश्वर, विश्वरूप, विद्यापति गौड़, जयानक।

–: रणथम्भौर के चौहान :–

♣ संस्थापक – गोविन्दराज (पृथ्वीराज–III का पुत्र)।

♣ वागभट्ट एवं हम्मीर ने सल्तनत से संघर्ष किया था।

हम्मीरदेव चौहान (1282–1301 ई.)

♣ इनके समय जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर 2 आक्रमण (1290–92) किये थे।

♣ अल्लाउद्दीन खिलजी ने तीन आक्रमण (1300–1301) किये थे।

♣ अलाउद्दीन के सेनापति – उलूग खां, नुसरत खां (नुसरत खां झाईन दुर्ग के पास संघर्ष के दौरान मारा गया)।

♣ हम्मीरदेव ने अल्लाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मदशाह को शरण दी थी।

♣ हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध था।

रणथम्भौर का प्रथम साका – 1301

♣ आक्रमणकारी – अलाउद्दीन खिलजी – सेनापति – उलूग खां

♣ शासक – हम्मीरदेव चौहान

♣ हम्मीर के सेनापति – रणमल एवं रतिपाल (विश्वासघात करके अलाउद्दीन का साथ दिया)

♣ जौहर – रानी रंग दे

♣ अलाउद्दीन ने दुर्ग जीतकर दुर्ग की जिम्मेदारी उलूग खां को दी थी।

ग्रंथ :–

♣ हम्मीर महाकाव्य – नयनचन्द्र सूरी

♣ हम्मीर हठ – चन्द्रशेखर

–: जालौर का सोनगरा चौहान राजवंश :–

♣ संस्थापक – कीर्तिपाल

♣ परमारों को हराकर अधिकार किया था।

कान्हडदेव

♣ इनके समय 1311 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर पर आक्रमण किया। इसका वर्णन पद्मनाभ के ग्रंथ कान्हड़देव प्रबन्ध में किया गया।

♣ अलाउद्दीन ने जालौर दुर्ग को जीतकर इसका नाम जलालाबाद रखा था।

♣ इस समय उलूग खां बयाना का सूबेदार था।

♣ सिवाना दुर्ग का नाम खैराबाद रखा था।

अलाउद्दीन का विजय अभियान –

1. रणथम्भौर – 1301
2. चितौड़गढ़ – 1303
3. सिवाना – 1308
4. जालौर – 1311

♣ पृथ्वीराज विजय के लेखक जयानक थे।

♣ शाकम्भरी से अलग होने वाली प्राचीन शाखा नाडोल शाखा है।

♣ **नाडोल** में चौहान राजवंश के संस्थापक **लक्ष्मण** था।

♣ सिरोही के **देवड़ा** चौहान वंश के संस्थापक **लुम्बा** थे। राजधानी **चन्द्रावती** (सिरोही) थी।

♣ सहसमल ने सिरोही को राजधानी बनाया।

♣ बूँदी के **हाड़ा** राजवंश की स्थापना **देवा** ने की थी।

♣ उम्मेद सिंह का घोड़ा – **हुन्जा** था।

♣ कोटा का प्रथम शासक माधोसिंह था।

♣ कोटा का नाम भील शासक **कोटिया** के नाम पर रखा गया।

♣ कोटा के राजा भीमसिंह को फर्रूखशियर ने शेरगढ़ दुर्ग दिया था।

♣ झाला जालिम सिंह को कोटा का दुर्गादास कहा जाता है।

♣ झालावाड़ रियासत – 1838 में बनाई गई।

मारवाड़ के राठौड़

♣ राठौड़ शब्द **राष्ट्रकूट** से बना है।

♣ मुण्डियार री ख्यात मारवाड़ के राठौड़ों से सम्बन्धित है।

♣ कुलदेवी – नागणेची माता

♣ मूल पुरूष/संस्थापक – **राव सीहा**

♣ प्रारंभिक राजा : राव सीहा – राव आस्थान – राव धूहड़ – राव रायपाल

♣ रावचूड़ा ने मण्डोर को राठौड़ों की प्रथम राजधानी बनाया था।

♣ राव जोधा ने लगभग 50 वर्षों तक शासन किया था।

♣ राव **जोधा** ने **1459** ई. में **मेहरानगढ़** दुर्ग की नींव रखी तथा **जोधपुर** को राजधानी बनाया था।

♣ राव गांगा की हत्या पुत्र मालदेव ने की थी।

राव मालदेव

www.skresultpoint.com

- राव मालदेव को **हशमत वाला शासक** कहा जाता है।
- मालदेव को **52 युद्धों एवं 58 परगनों का नायक**/स्वामी कहा गया है।
- **हीराबाड़ी का युद्ध** : राव मालदेव एवं नागौर के दौलतखां के मध्य लड़ा गया।
- **पाहेबा/साहेबा का युद्ध** : 1541–42 ई., राव मालदेव ने बीकानेर के राव जैतसी को हराया था।

गिरी–सुमेल युद्ध – 1544

- शेरशाह सूरी ने मालदेव के सेनापति जैता एवं कूंपा को हराया था।
- बीकानेर में कल्याणमल एवं मेड़ता के वीरमदेव ने गिरी–सुमेल युद्ध के समय शेरशाह सूरी का साथ दिया था।
- **हरमाड़ा का युद्ध** (1557) : मालदेव के समय – हाजी खाँ एवं उदयसिंह के मध्य हुआ।
- मालदेव की रानी उमादे भटियाणी (जैसलमेर) को रूठी रानी के नाम से जाना जाता है।
- मालदेव का उतराधिकारी राव चन्द्रसेन था।

राव चन्द्रसेन

- इन्हें भूला बिसरा राजा कहा जाता है।
- इन्होंने मुगलों विरूद्ध निरंतर स्वतंत्रता का संघर्ष जारी रखा था।
- इन्हें महाराणा प्रताप का अग्रगामी (पथ प्रदर्शक) कहा जाता है।
- राव चन्द्रसेन का भाई रामसिंह, चन्द्रसेन के विरूद्ध 1564 में अकबर से सहायता प्राप्त करने हेतु जाता है।
- अकबर ने हुसैन कुली खां के नेतृत्व में सेना जोधपुर भेजी थी।
- चन्द्रसेन ने मुगलों का विरोध करने के लिए **भाद्राजून** में अपनी सेना को संग्रहित किया था।
- **संकटकाल** में राव चन्द्रसेन का प्रमुख केन्द्र **सिवाना** था।
- राव चन्द्रसेन महाजन वर्ग से धन की लूट के कारण जनता में अलोकप्रिय हो गये थे।
- अकबर ने बीकानेर के राजा रायसिंह को सेना देकर चन्द्रसेन को पकड़ने हेतु भेजा था।
- इन्होंने मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की थी।
- **1581–83** के मध्य जोधपुर का कोई राजा नहीं था इसे **खालसा** क्षेत्र घोषित कर दिया था।

मोटाराजा उदयसिंह

- इन्होंने मारवाड़ में सर्वप्रथम मुगलों की अधीनता स्वीकार की है।
- इन्होंने अपनी पुत्री जगत गुसाई का विवाह सलीम (जहाँगीर) से किया।
- अकबर ने **सूरसिंह** को **सवाई राजा** की उपाधि दी थी।
- **गजसिंह** ने सर्वप्रथम **महाराजा** की उपाधि धारण की थी।
- **जहाँगीर** ने गजसिंह को **दलथम्भन** की उपाधि दी थी।

महाराजा जसवन्तसिंह–I

- इनका संरक्षक **राजसिंह कुंपावत** था।
- इन्होंने **आनन्द विलास** ग्रन्थ लिखा था।
- इनको राज्याभिषेक के समय 4000 जात एवं 4000 सवार का मनसब दिया।
- **धरम्मत (MP) के युद्ध** : इस युद्ध में जसवन्तसिंह ने दाराशिकोह के साथ में औरंगजेब के खिलाफ युद्ध लड़ा। इस युद्ध को बीच में छोड़कर हारकर जोधपुर आये थे।
- **दौराई का युद्ध (1659) ई. (अजमेर)** : यह युद्ध दाराशिकोह एवं औरंगजेब के मध्य लड़ा गया था।
- **खजवा युद्ध (1659)** : इस युद्ध में जसवन्तसिंह ने औरंगजेब का साथ दिया था।

अजीतसिंह

- जसवन्त सिंह प्रथम के पुत्र अजीतसिंह को औरंगजेब ने दिल्ली में कैद कर दिया था।
- मेवाड़ महाराणा राजसिंह ने अजीतसिंह को शरण दी थी।
- **दुर्गादास राठौड़** ने अजीतसिंह को राजा बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- अजीतसिंह ने गज उद्धार ग्रंथ लिखा था।
- अजीतसिंह को कान का कच्चा कहा गया।
- अजीतसिंह ने राजा बनने के बाद दुर्गादास को मारवाड़ से निकाला दिया था। **दुर्गादास मेवाड़** चले गये थे।
- दुर्गादास को मेवाड़ में अमरसिंह–II ने विजयपुर की जागीर एवं रामपुर का हाकिम बनाया।
- औरंगजेब के पुत्र अकबर–II को दुर्गादास ने मराठा सरदार संभाजी तक पहुँचाया।
- दुर्गादास का देहान्त क्षिप्रा नदी के किनारे उज्जैन (मध्य प्रदेश) में हुआ।

अभयसिंह

- इनके समय 1730 ई. में **खेजड़ली गांव** की घटना घटित हुई थी।
- इनके समय हुए अहमदाबाद के युद्ध का वर्णन वीरभाण ने अपने ग्रंथ राजरूपक में किया है।
- इनके दरबारी करणीदान ने सूरजप्रकाश ग्रंथ लिखा था।
- वीर तेजाजी मेले की शुरूआत इनके समय हुई थी।

जसवन्तसिंह–II

- इनके समय प्रधानमंत्री सर प्रतापसिंह के बुलावे पर स्वामी दयानन्द सरस्वती जोधपुर आये थे। इस समय जोधपुर में आर्य समाज की नींव रखी गई।
- 1887 में महाराणी विक्टोरिया के स्वर्ण जुबली उत्सव में भाग लेने हेतु मारवाड़ से **सर प्रतापसिंह** को इंग्लैण्ड भेजा गया।
- सरदार सिंह ने अपने पिता जसवन्त सिंह की याद में **जसवन्तथड़ा (राजस्थान का ताजमहल)** का निर्माण करवाया था।
- मानसिंह (संन्यासी राजा) ने अंग्रेजों से 1818 में संधि की थी।
- 1857 की क्रांति के समय राजा तख्तसिंह थे।
- आजादी के समय राजा हनुवंत सिंह थे।
- मेड़ता के राव दूदा ने राठौड़ वंश की मेड़तिया शाखा स्थापित की थी।

बीकानेर (बीका + नरा जाट) के राठौड़

- मूल पुरूष – **राव बीका** (रावजोधा के पुत्र)

राव बीका

- इन्होंने 1465 ई. में करणीमाता के आशीर्वाद से राठौड़ राजवंश की नींव रखी थी।
- इन्होंने 1488 में बीकानेर नगर की स्थापना की थी।
- राव **लूणकरण** को बीठू सूजा के ग्रंथ राव जैतसी रो छंद में **"कलयुग का कर्ण"** कहा गया है।

www.skresultpoint.com

- ♣ राव जैतसी रो छंद के अनुसार बाबर के पुत्र कामरान ने राव जैतसी के समय बीकानेर पर आक्रमण किया था।
- ♣ राव जैतसी के बाद राजा कल्याणमल बने थे।
- ♣ अकबर ने 1570 ई. में नागौर दरबार का आयोजन किया था। इस समय कल्याणमल के पुत्र रायसिंह ने अकबर की अधीनता स्वीकार की थी।
- ♣ अकबर ने इस समय **जोधपुर का प्रशासन रायसिंह** को सौंपा था।
- ♣ कल्याणमल के पुत्र पृथ्वीराज राठौड़ को अकबर ने गागरोन दुर्ग दिया था। यहाँ रहते हुए **वेली कृष्ण रूक्मणी** ग्रंथ लिखा।

महाराजा रायसिंह (1574–1612)

- ♣ अकबर एवं जहाँगीर के समकालीन थे।
- ♣ जहाँगीर ने रायसिंह को पाँच हजार का मनसब प्रदान किया गया।
- ♣ इन्होंने 1603 के सलीम (जहाँगीर) के मेवाड़ अभियान में भाग लिया था।
- ♣ रायसिंह को अकबर के समय थट्टा, काबूल, ब्लूचिस्तान एवं कंधार अभियान में भाग लिया था।
- ♣ रायसिंह को मुंशीदेवी प्रसाद को **"राजपूताने का कर्ण"** कहा था।
- ♣ अकबर ने रायसिंह को शमसाबाद एवं नूरपुर की जागीर एवं राय की उपाधि दी थी।
- ♣ **रायसिंह कठौली के युद्ध** में इब्राहीम मिर्जा को हराया था।

कर्णसिंह

- ♣ राजा कर्णसिंह शाहजहाँ एवं औरंगजेब के समकालीन थे।
- ♣ औरंगजेब ने कर्णसिंह को जांगलधर बादशाह की उपाधि दी थी।

मतीरे की राड़ युद्ध – 1644

- ♣ कर्णसिंह एवं अमरसिंह (नागौर) के मध्य लड़ा गया था।

अनूपसिंह

- ♣ औरंगजेब के **अनुपसिंह को माही मरातिव** की उपाधि दी।
- ♣ अनुपसिंह के दरबारी पण्डित भावभट्ट ने अनूपविलास ग्रंथ लिखा था।

गंगासिंह

- ♣ गंगासिंह **नरेन्द्रमण्डल के प्रथम चांसलर** थे।
- ♣ तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया था।

आमेर के कच्छवाह राजवंश

- ♣ मूल पुरूष – **तेजकरण/दूल्हेराय**
- ♣ तेजकरण ने **1137 में दौसा** को जीतकर कच्छवाहों की प्रथम राजधानी बनाई।
- ♣ कच्छवाहों की कुल देवी – जमुवाय माता
- ♣ कच्छवाहों की आराध्य देवी – शिला माता
- ♣ 1207 ई. में **कोकिल देव ने आमेर** को राजधानी बनाया।
- ♣ **पृथ्वीराज** ने अपने 12 पुत्रों के लिए राज्य को 12 भागों में विभाजित कर दिया जिसे **12 कोटड़ी** कहा जाता था।

भारमल (बिहारीमल)

- ♣ राजपुताना का प्रथम शासक जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की (1562)।
- ♣ इन्होंने 1562 में अपनी पुत्री हरखा बाई (जोधाबाई) का विवाह सांभर में अकबर के साथ किया।
- ♣ इन्होंने अपने पुत्र भगवन्तदास व पौत्र मानसिंह को अकबर की सेवा में भेज दिया।
- ♣ भगवन्तदास ने अपनी पुत्री मानीबाई का विवाह जहाँगीर से किया था।
- ♣ भारमल एवं भगवन्तदास को अमीर–उल–उमरा की उपाधि दी।

मानसिंह

- ♣ इन्होंने पचरंगी ध्वजा (राज्य ध्वज) बनाई थी।
- ♣ अकबर ने सर्वाधिक **7 हजार का मनसब** दिया व **फर्जन्द** (दतक पुत्र) की उपाधि दी।
- ♣ जहाँगीर ने मानसिंह के मनसब में कमी की थी।
- ♣ हल्दीघाटी युद्ध में अकबर की सेना का नेतृत्व किया।
- ♣ अकबर ने मानसिंह को काबुल, बिहार व बंगाल का सूबेदार बनाया।
- ♣ दो मुगल बादशाह अकबर एवं जहाँगीर के समकालीन थे।
- ♣ इनकी पत्नी कनकावती ने अपने पुत्र जगतसिंह की याद में जगतशिरोमणि का मंदिर (आमेर) बनवाया।
- ♣ बंगाल अभियान के दौरान कैदार कायत को हराकर वहां से **शिलामाता** की प्रतिमा लाये।
- ♣ मृत्यु अहमदनगर अभियान के दौरान इलिचपुर में हुई।

मानसिंह के दरबारी :–

1. जगन्नाथ
2. पुण्डरीक विट्ठल
3. सुन्दरदास
4. हरिनाथ

मिर्जा राजा जयसिंह

- ♣ इन्होंने 1665 में शिवाजी के साथ पुरन्दर की संधि की थी।
- ♣ इनको शाहजहां ने मिर्जा राजा की उपाधि दी।
- ♣ इन्होंने तीन मुगल बादशाह जहांगीर, शाहजहां व औरंगजेब के समय शासन किया।
- ♣ इन्होंने सर्वाधिक समय (46 वर्ष) तक शासन किया।
- ♣ इनके दरबारी बिहारीदास ने बिहारी सतसई ग्रंथ लिखा था।

सवाई राजा जयसिंह

- ♣ पिता – विशनसिंह (विष्णु सिंह) थे।
- ♣ इनको औरंगजेब ने सवाई की उपाधि दी।
- ♣ सवाई जयसिंह ने सद्भावना यात्रा आयोजित की।
- ♣ **जाजऊ का युद्ध 1707 ई.** : मुअज्जम व आजम के मध्य लड़ा गया था। सवाई जयसिंह ने आजम का साथ दिया था एवं इनके भाई विजय सिंह ने मुअज्जम का साथ दिया था, मुअज्जम युद्ध जीतकर बहादुर शाह प्रथम के नाम से दिल्ली का शासक बना था।
- ♣ बहादुर शाह प्रथम ने सवाई जयसिंह के स्थान पर **विजयसिंह** को राजा बना दिया।
- ♣ मुहम्मदशाह ने इनको **राजराजेश्वर** की उपाधि दी थी।

देबारी समझौता 1708 ई. :–

- ➢ मेवाड़ – अमरसिंह II
- ➢ मारवाड़ – अजीतसिंह
- ➢ जयपुर – सवाई जयसिंह

- ♣ सवाई जयसिंह के पुत्र ईश्वरी सिंह ने जयपुर में सरगासूली (ईसरलाट) का निर्माण करवाया था।

हुरड़ा सम्मेलन (1734) : भीलवाड़ा :–

- ➢ आयोजनकर्ता – सवाई जयसिंह
- ➢ अध्यक्षता – जगतसिंह–II (मेवाड़)

www.skresultpoint.com

- ♣ सवाई जयसिंह अंतिम शासक थे जिन्होंने अवश्मेध यज्ञ किया।
- ♣ यज्ञ पुरोहित पुण्डरीक रत्नाकर ने **जयसिंह कल्पद्रुम** ग्रंथ लिखा।
- ♣ इन्होंने अपनी सेना में दादूपंथियों को शामिल किया था।
- ♣ सवाई जयसिंह ने **5 वैद्यशालाओं** का निर्माण करवाया था। (दिल्ली, जयपुर/जन्तर मन्तर, बनारस, उज्जैन, मथुरा)
- ♣ जन्तर–मन्तर (जयपुर) को 2010 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।
- ♣ जीज मुहम्मदशाही – नक्षत्रों से सम्बन्धित ग्रंथ।
- ♣ जयसिंह कारिका – जयसिंह द्वारा लिखित ज्योतिष ग्रंथ

जयपुर नगर :–

- ➢ स्थापना – **18 नवम्बर, 1727**
- ➢ संस्थापक – सवाई जयसिंह , जयपुर को आयलैण्ड ऑफ ग्लोरी कहते है। **पूर्व का पेरिस** व रंग श्री द्वीप भी कहते है।
- ➢ नींव – पुरोहित जगन्नाथ ने रखी। (महाराष्ट्र)
- ➢ वास्तुकार – **विद्याधर भट्टाचार्य (बंगाल)**
- ➢ कच्छवाहों की अंतिम राजधानी जयपुर थी।
- ♣ सवाई जयसिंह को तीन बार मालवा का सूबेदार बनाया गया।
- ♣ सवाई जयसिंह ने 7 मुगल बादशाहों के साथ कार्य किया।
- ♣ जयसिंह के बाद उनके पुत्रों माधोसिंह व ईश्वरीसिंह में राजसिंहासन को लेकर संघर्ष हुआ था।
- ♣ ईश्वरीसिंह ने जयपुर में सरगासूली (ईसरलाट) का निर्माण करवाया।

सवाई प्रतापसिंह

- ♣ **तुंगा का युद्ध (1787)** : सवाई प्रतापसिंह vs महादजी सिंधिया (विजय सवाई प्रतापसिंह)
- ♣ **पाटन का युद्ध (1790)** : सवाई प्रतापसिंह vs महादजी सिंधिया (विजय– महादजी सिंधिया)
- ♣ सवाई प्रतापसिंह **ब्रजनिधि** के नाम से कविताएँ लिखते थे।
- ♣ प्रतापसिंह के दरबार में 22 प्रसिद्ध विद्वानों एवं संगीतज्ञों की मण्डली रहती थी। इसे **गंधर्व बाइसी** कहा जाता था।
- ♣ राधा गोविन्द संगीतसार ग्रंथ – देवर्षि ब्रजपाल भट्ट
- ♣ सवाई प्रतापसिंह के संगीत गुरू – चाँद खाँ
- ♣ सवाई प्रतापसिंह ने **1799 ई. में हवामहल** का निर्माण करवाया। वास्तुकार – **लालचंद उस्ता**
- ♣ महाराजा जगतसिंह द्वितीय ने अपनी प्रेमिका रसकपूर को जयपुर राज्य का आधार राज्य दे दिया था एवं इनके नाम के सिक्के जारी किये थे।

रामसिंह II

- ♣ इन्होंने **1857** में **मदरसा–ए–हुनरी** कला विद्यालय की स्थापना की थी।
- ♣ इन्होंने ने प्रिंस अल्बर्ट के जयपुर आगमन पर 1876 में जयपुर को गुलाबी रंग से रंगवाया था।
- ♣ इनके समय अल्बर्ट हॉल बनाया गया।
- ♣ इसका उद्घाटन **माधोसिंह द्वितीय** के समय हुआ।
- ♣ इन्हानें **1878 में रामप्रकाश थियेटर** स्थापित किया था।
- ♣ माधोसिंह ने बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय निर्माण हेतु चन्दा दिया था।

गुहिल राजवंश

उत्पति :–

- ➢ सूर्यवंशी – जी.एच. ओझा
- ➢ ब्राह्मण वंश – डी.आर. भण्डारकर व गोपीनाथ शर्मा
- ♣ शाखाएँ :– मुहणौत नैणसी ने 24 शाखाएँ बताई थी।
- ♣ मूल पुरूष – गुहिलादित्य
- ♣ आदर्श वाक्य – "जो दृढ़ राखै, धर्म को, तिहि राखै करतार"
- ♣ "यत ब्रह्मण्डे तत् पिण्डे" नामक राजव्यवस्था का सम्बन्ध गुहिल राजवंश से था।

बप्पा रावल (काल भोज)

- ♣ इन्होंने गुहिलों की प्रथम राजधानी नागदा (उदयपुर) को बनाया था।
- ♣ एकलिंगजी के मुख्य पुजारी हारित ऋषि के आशीर्वाद से सन् 734 ई. में बप्पा ने मौर्य राजा मानमौर्य से चितौड़ दुर्ग जीता।
- ♣ ऋषि हारित पाशुपत सम्प्रदाय के साधु थे।
- ♣ बापा ने कैलाशपुरी (उदयपुर) में एकलिंगजी का मंदिर बनवाया।
- ♣ मेवाड़ के शासक एकलिंग जी के दिवान के रूप में शासन करते थे।

अल्लट

- ♣ अल्लट ने आहड़ को दूसरी राजधानी बनाया।
- ♣ अल्लट ने मेवाड़ में सर्वप्रथम नौकरशाही का गठन किया था।
- ♣ रणसिंह (कर्णसिंह) के समय गुहिल **दो** शाखाओं में विभाजित हो गये थे।

1. रावल शाखा
2. राणा शाखा (**सिसोदिया शाखा**)

- ♣ जैत्रसिंह ने चितौड़ को राजधानी बनाया।
- ♣ इनके बाद तेजसिंह व समर सिंह शासक बने थे।

रावल रतनसिंह

- ♣ रावल शाखा का अंतिम राजा।
- ♣ अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 में चितौड़ पर आक्रमण किया।
- ♣ रतनसिंह का दरबारी राघव चेतन इनसे नाराज होकर अलाउद्दीन खिलजी की शरण में चला गया था।

चितौड़ का प्रथम साका (1303) :

- ➢ चितौड़ का प्रथम व राजस्थान का द्वितीय साका रानी पद्मिनी के नेतृत्व में हुआ।
- ➢ रतनसिंह के सेनापति – गौरा–बादल
- ➢ अलाउद्दीन का सेनापति – उलूग खां
- ➢ अलाउद्दीन ने चितौड़गढ़ का नाम खिज्राबाद रख दिया।
- ➢ अमीर खुसरो ने अपने ग्रंथ खजाइन उल फुतुह में इस साके का वर्णन किया।

राणा हम्मीर

- ♣ इन्होंने सिसोदिया शाखा के शासन की शुरूआत की थी।
- ♣ राणा हम्मीर को **विषमघाटी पंचानन** के नाम से जाना जाता है।
- ♣ इन्हें मेवाड़ का मुक्तिदाता कहा जाता है।

महाराणा लाखा

- ♣ इनके समय जावर में चाँदी की खानें मिली थी।
- ♣ इनके समय एक बनजारे ने पिछोला झील का निर्माण करवाया।

www.skresultpoint.com

- ♣ लाखा के पुत्र राजकुमार चूड़ा को **"मेवाड़ का भीष्म पितामाह"** कहा जाता है।
- ♣ महाराणा मोकल ने एकलिंगजी के मंदिर के चारो ओर परकोटा बनवाया तथा समिद्धेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया।

महाराणा कुंभा

- ♣ महाराणा कुंभा का गुजरात के साथ संघर्ष का प्रमुख कारण नागौर का विवाद था।
- ♣ **सारंगपुर का युद्ध (1437 ई.)** : (महाराणा कुंभा vs मांडू के सुल्तान महमूद खिलजी I) विजय – महाराणा कुंभा

विजय स्तंभ (कीर्तिस्तंभ) :–

- ➢ मालवा विजय (सारंगपुर युद्ध) के उपलक्ष में चितौड़ किले में बनवाया (1440–1448)।
- ➢ ऊँचाई – 122 फीट, नौ मंजिला
- ➢ सूत्रधार – जैता
- ➢ विजय स्तम्भ का पुनः निर्माण महाराणा स्वरूपसिंह ने करवाया था।
- ➢ भगवान विष्णु को समर्पित है।
- ➢ 1949 में विजय स्तंभ पर डाक टिकट जारी किया गया।

- ♣ **चंपानेर की संधि (1456)** : मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी और गुजरात के सुल्तान कुतुबद्दीन ने महाराणा कुंभा को हराकर चितौड़ पर अधिकार के उद्देश्य से संधि की।
- ♣ **बदनौर का युद्ध (1457)** : महाराणा कुंभा ने महमूद खिलजी को हराया था। युद्ध जीतने के बाद बदनोर में कुशाल माता का मंदिर बनाया था।
- ♣ महाराणा कुंभा ने कुंभलगढ़, अचलगढ़, मचान दुर्ग, बसन्ती दुर्ग, आदि दुर्गों का निर्माण करवाया था।
- ♣ महाराणा कुंभा वीणा बजाते थे।

महाराणा कुंभा के उपाधियां :–

- ➢ अभिनव भरताचार्य – संगीत प्रेमी व संगीत में दक्ष विद्वान
- ➢ हाल गुरू – पहाड़ी दुर्गों का स्वामी
- ➢ छाप गुरू – छापामार युद्ध में पारंगत
- ➢ राणो रासौ – साहित्यकारों का आश्रयदाता
- ➢ चाप गुरू, दान गुरू

कुंभा द्वारा रचित ग्रंथ :–

1. संगीतराज(5 कोषो में विभाजित है)
2. रसिक प्रिया
3. सूड़ प्रबंध
4. संगीत मीमांसा
5. चंडीशतक की टीका
6. सुधा प्रबन्ध

कुंभा के राज्याश्रित विद्वान कलाकार :–

शिल्पी मंडन :–
ग्रंथ – देवतामूर्ति प्रकरण, राजवल्लभ, वास्तुशास्त्र, वास्तुसार, रूपावतार, रूपमंडन (मूर्तिकला), वास्तुमंडन, प्रसादमंडन।

नाथा (मंडन का भाई) :–
ग्रंथ – वास्तुमंजरी

श्री कान्हा व्यास :– एकलिंगमहात्म्य के रचनाकार

गोविन्द (मंडन के पुत्र) :– ग्रंथ – कलानिधि

श्री सारंग व्यास :– कुंभा का संगीत गुरू

अन्य दरबारी – टिल्ला भरत, मुनि सुन्दर सूरी

महाराणा सांगा (1509–1528)

- ♣ महाराणा सांगा हिन्दुपत के नाम से प्रसिद्ध थे।
- ♣ टॉड ने इन्हें सिपाही का अंश कहा।

www.skresultpoint.com

- ♣ **गागरोन का युद्ध (1519)** : सांगा vs महमूद खिलजी, (विजय–सांगा)
- ♣ सांगा ने माण्डु के मेदिनीराय को गागरोन तथा चंदेरी की जागीर दी।
- ♣ **खातौली युद्ध (कोटा) 1517** : सांगा vs इब्राहीम लोदी (विजय – सांगा)
- ♣ **बाड़ी (धौलपुर) का युद्ध 1519** : सांगा vs इब्राहीम लोदी (विजय – सांगा)
- ♣ **बयाना का युद्ध (16 फरवरी, 1527)** : सांगा vs बाबर (सांगा विजय)
- ♣ महाराणा सांगा ने अफगान सरदार महमूद लोदी एवं हसन खां को शरण दी थी।

खानवा का युद्ध 17 मार्च 1527 :

- ➢ बाबर vs महाराणा सांगा (विजय – बाबर)।
- ➢ सांगा के युद्धभूमि से बाहर जाने पर झाला अज्जा ने राजचिहन धारण कर युद्ध किया।

खानवा युद्ध में शामिल प्रमुख राजा :–

1. राजा भारमल (ईडर)
2. वीरमदेव मेड़तिया
3. महमूद लोदी
4. हसन खां
5. मालदेव
6. मेदिनीराय
7. राव कल्याणमल।

- ♣ मारवाड़ के राजा राव गांगा ने मालदेव के नेतृत्व में सेना भेजी थी।
- ♣ सलहदी तंवर ने महाराणा सांगा के साथ विश्वास घात किया।
- ♣ 30 जनवरी, 1528 को सांगा को विष देने से कालपी नामक स्थान पर मृत्यु हो गई।
- ♣ मांडलगढ़ में सांगा की समाधि है।
- ♣ महाराणा सांगा की मृत्यु के बाद राणा रतनसिंह शासक बने थे।

चितौड़ का दूसरा साका (1534) :

- ♣ इस समय चितौड़ के शासक विक्रमादित्य थे।
- ♣ गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह ने चितौड़ पर आक्रमण किया, हाड़ी रानी कर्मावती ने जौहर किया।
- ♣ कर्मावती ने सहायता के लिए हुमायूँ का राखी भेजी थी।

महाराणा उदयसिंह (1540–1572)

- ♣ 1537 में कुंभलगढ़ में राज्याभिषेक हुआ।
- ♣ इन्होंने 1559 में उदयपुर शहर की नींव डाली।
- ♣ उदयसिंह ने मालवा के अकबर द्वारा पदच्युत शासक बाज बहादुर को शरण दी, इसलिए अकबर ने 1567 में चितौड़ पर आक्रमण किया।

चितौड़ का तीसरा साका (1568) :

- ➢ अकबर के आक्रमण के समय उदयसिंह गोगुन्दा की पहाड़ियों में चले गये थे, मेवाड़ की सेना का नेतृत्व जयमल **मेड़तिया व फता सिसोदिया** ने किया था।
- ➢ फता सिसोदिया की रानी फूलकंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ था।
- ➢ अकबर ने जयमल मेड़तिया व फता सिसोदिया की गजारूढ़ पाषाण मूर्तियां आगरा किले के द्वार पर लगाई गई।

महाराणा प्रताप (1572–97)

- ➢ जन्म – 9 मई, 1540, कुंभलगढ़ दुर्ग

- बचपन का नाम – कीका
- 1572 में गोगुंदा में राज्याभिषेक (राजमहलों की क्रांति)।
- माता – जयवंता बाई
- अकबर द्वारा महाराणा प्रताप को समझाने हेतु **चार दूत** मण्डल भेजे गये–
  1. जलाल खांन
  2. मानसिंह
  3. भगवंतदास
  4. टोडरमल

हल्दीघाटी युद्ध (18 जून, 1576) :

- अकबर (सेनापति मानसिंह) vs महाराण प्रताप (सेनापति – हकीम खां सूरी)
- महाराणा प्रताप की भील सेना का नेतृतव राणा पूंजा ने किया था।
- वीर विनोद ग्रंथ के अनुसार युद्ध में मुगल सेना में 80,000 सैनिक थे।
- झाला बीदा ने युद्ध मैदान में महाराणा प्रताप का राज मुकुट धारण कर युद्ध लड़ा।
- इस युद्ध का वर्णन अब्दुल कादिर बदायूनी के ग्रंथ मुन्तखाब उल तवारीख में मिलता है।

हल्दीघाटी युद्ध के अन्य नाम :–

- मेवाड़ की थर्मोपल्ली – कर्नल टॉड
- खमनौर का युद्ध – अबुल फजल
- गोगुंदा का युद्ध – बदायूंनी
- हल्दीघाटी युद्ध को हाथियों का युद्ध भी कहा जाता है।
- **प्रताप के हाथी** – लूना एवं रामप्रसाद
- राजप्रशस्ति, राजप्रकाश ग्रंथ एवं जगदीश मंदिर प्रशस्ति के अनुसार हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय हुई थी।
- हल्दीघाटी युद्ध जीतने के बाद उदयपुर का प्रशासन जगन्नाथ कच्छवाहा को सौंपा था।
- महाराणा प्रताप के विरूद्ध अकबर ने शाहबाज खां को 3 बार भेजा था। शाहबांज खां ने कुंभलगढ़ दुर्ग को जीता था।

दिवेर युद्ध (1582) :

- महाराणा प्रताप vs सुल्तान खां गौरी (विजय महाराणा प्रताप)
- दिवेर विजय के बाद प्रता ने चावंड को अपना निवास स्थान बनाया।
- इस युद्ध को कर्नल टॉड मेवाड़ का मेराथन कहा जाता है।
- अकबर का प्रताप के विरूद्ध अंतिम अभियान 1584 ई. में जगनाथ कच्छवाहा के नेतृत्व में हुआ था, इससे पहले अब्दुल रहीम खान–ए–खाना को भेजा गया।
- महाराणा प्रताप ने 1585 में **चावंड को** राजधानी बनाया।
- महाराणा प्रताप के भाई जगमाल को अकबर ने जहाजपुर की जागीर दी थी।

प्रताप के काल में लिखे गये ग्रंथ :–

- **चक्रपाणि मिश्र** – विश्ववल्लभ, मुहूर्तमाला, राज्याभिषेक पद्धति

महाराणा अमरसिंह I

- इन्होंने 5 फरवरी, 1615 ई. को जहाँगीर से संधि की थी।
- सर टॉमस रो ने कहा था कि, "बादशाह ने मेवाड़ के राणा को आपसी समझौते से अधीन किया था न कि बल से।"
- महाराणा जगतसिंह I ने पिछोला झील में जग मंदिर महल का निर्माण करवाया।

महाराणा राजसिंह (1652–1680)

- उपाधि – विजय कटकातू
- हिन्दु राजाओं ने राजसिंह के नेतृत्व में औरंगजेब का विरोध किया था।
- इन्होंने चारूमति (किशनगढ़ के शासक रूपसिंह की पुत्री) से विवाह किया।
- राजसिंह ने नाथद्वारा (सिहाड़) में श्रीनाथ जी का मंदिर बनवाया था।
- राजसिंह की रानी रामरस दे ने देबारी में जया (त्रिमुखी) बावड़ी का निर्माण करवाया था।
- राज प्रशस्ति (1676) – रणछोड़ भट्ट तैलंग।

जगतसिंह–II

- इन्होंने अजमेर दरगाह हेतु 4 गांव भेंट किए थे।
- इन्होंने पिछोला झील में जगत निवास महल का निर्माण करवाया।
- **महाराणा भीमसिंह** की पुत्री कृष्णाकुमारी से विवाह को लेकर मारवाड़ के मानसिंह एवं जयुपर के जगतसिंह II के मध्य 1807 में गिंगोली (परबतसर) का युद्ध लड़ा गया।
- अमीर खां पिण्डारी के कहने पर कृष्णाकुमारी को जहर दे दिया गया था।
- सहेलियो की बाड़ी का निर्माण **संग्रामसिंह–II** ने करवाया था।
- महाराणा स्वरूपसिंह के साथ इनकी पासवान ऐंजाबाई सती हुई जो इस राजपरिवार में सती होने की अंतिम घटना थी।
- महाराणा शंभुसिंह ने **महकमा–ए–खास** की स्थापना की।

महाराणा सज्जन सिंह

- इन्होंने इजलास खास परिषद की स्थापना की।
- श्यामलदास को कविराज की उपाधि दी।
- सज्जनसिंह को लॉर्ड रिपन ने ग्रेंट कमांड ऑफ द स्टार ऑफ इंडिया की उपाधि दी।
- महाराणा सज्जन सिंह ने उदयपुर में वैवाहिक समस्याओं के समाधान के हेतु 2 जुलाई, 1877 के दिन **देश हितैषणी सभा** की स्थापना की।
- महाराणा फतेहसिंह ने विक्टोरिया हॉल का निर्माण करवाया।

–: वागड़ के गुहिल :–

- मेवाड़ के **सामन्त सिंह** ने वागड़ में गुहिल राजवंश की स्थापना की थी।
- राजधानी – वटप्रदक (बड़ौदा) थी।
- उदयसिंह के समय वागड़ को दो भागों में बांट दिया गया।
  1. डूंगरपुर : उदयसिंह
  2. बांसवाड़ा : जगमाल सिंह
- डूंगरपुर व बांसवाड़ा के शासक महारावल की उपाधि धारण करते थे।

–: जाट राजवंश – भरतपुर :–

- भरतपुर के स्वतंत्र जाट राजवंश के संस्थापक **चूड़ामन** थे।
- बदनसिंह ने डीग के महलों का निर्माण करवाया था।

सूरजमल (सुजानसिंह)

- बदनसिंह के पुत्र।
- लोहागढ़ दुर्ग का निर्माण करवायसा था।
- **जाटों का प्लेटों एवं अफलातून** कहा जाता है।
- दरबारी मंगलसिंह ने सुजान विलास ग्रंथ लिखा।

www.skresultpoint.com

- ♣ जवाहर सिंह ने दिल्ली को जीता था।
- ♣ भरतपुर एवं धौलपुर में जाट राजवंश का शासन था।
- ♣ वरीक वंश ने बयाना (भरतपुर) में शासन किया था।

–: आबू के परमार :–

- ♣ मूलपुरूष – धूमराज
- ♣ राजधानी – चन्द्रावती (सिरोही)
- ♣ मालवा के परमार राजा मुंज को कवि वृष की उपाधि दी गई।
- ♣ वागड़ के परमारों की राजधानी **उत्थुनक (अर्थुणा)** बांसवाड़ा थी।
- ♣ चावड़ा राजवंश – भीनमाल

एकमात्र मुस्लिम रियासत – टोंक

- ♣ संस्थापक अमीर खाँ पिण्डारी
- ♣ अलवर में कच्छवाह राज्य के संस्थापक प्रतापसिंह थे।

–: भाटी राजवंश (जैसलमेर) :–

- ♣ **उतर भड़ किवाड़** एवं छत्राला यादवपति कहा जाता था।
- ♣ प्रथम राजधानी – **भटनेर (भूपत भाटी)**
- ♣ जैसल भाटी ने जैसलमेर को राजधानी बनाया था।
- ♣ 1155 ई. में सोनारगढ़ दुर्ग की नींव रखी थी।
- ♣ सोनारगढ़ दुर्ग ढ़ाई साके के लिए प्रसिद्ध है।

अर्द्धसाका 1550 ई. :

- ♣ इस साके में केसरिया तो हुआ लेकिन जौहर नहीं हुआ।
- ♣ इस समय शासक लूणकरण थे।
- ♣ आक्रमणकारी – अमीर अली खाँ
- ♣ पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने जैसलमेर को आठवाँ अजूबा बताया।

–: करौली के यादव :–

- ♣ विजयपाल यादव ने बयाना (भरतपुर) को राजधानी बनाया था।
- ♣ नील की खेती के लिए प्रसिद्ध दुर्ग बयाना (भरतपुर) है।
- ♣ अर्जुनपाल ने कल्याणपुर (करौली) की स्थापना की थी।
- ♣ धर्मपाल–II ने करौली को राजधानी बनाया था।
- ♣ हरवक्षपाल ने सर्वप्रथम अंग्रेजों के साथ 1817 में आश्रित पार्थक्य नीति के तहत् संधि की थी।
- ♣ 1857 की क्रांति के समय शासक मदनपाल थे।

www.skresultpoint.com